International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 13-09-2025, Accepted: 13-10-2025, Published: 28-10-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 37-39

अशोक के धम्म की वर्तमान में प्रासंगिकता

Tara Chand Meena
Department of history, Jastana, Bonli, Sawai Madhopur, Rajasthan, India

सारांश
अशोक महान भारतीय इतिहास के ऐसे सम्राट थे, जिन्होंने सत्ता की सीमाओं से ऊपर उठकर मानवीय मूल्य, धर्म, करुणा और अहिंसा को शासन का आधार बनाया। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने हिंसा त्यागकर 'धम्म' को जीवन का मार्ग बनाया, जो नैतिकता, सहिष्णुता, सत्य, करुणा और लोककल्याण पर आधारित था। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जहाँ मानवता हिंसा, असहिष्णुता, पर्यावरण संकट, और नैतिक पतन से जूझ रही है, अशोक के धम्म के सिद्धांत और अधिक प्रासंगिक हो उठे हैं। यह शोध–पत्र अशोक के धम्म की मूल अवधारणा, उसके सामाजिक, नैतिक तथा मानवीय मूल्यों का विश्लेषण करते हुए उसकी आधुनिक समय में उपयोगिता को स्पष्ट करता है।

मूल शब्दः अशोक, धम्म, अहिंसा, करुणा, नैतिकता, आधुनिकता, सामाजिक समरसता अशोक के धम्म की वर्तमान में प्रासंगिकता

भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक का स्थान न केवल एक विजेता और शासक के रूप में है, बल्कि एक ऐसे मानवीय सम्राट के रूप में है जिसने राजनीति को नैतिकता से जोड़ा। अशोक के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने सत्ता और हिंसा के आकर्षण से ऊपर उठकर धर्म, करुणा और अहिंसा को शासन का आधार बनाया। कलिंग युद्ध के बाद जब उन्होंने लाखों लोगों के मरने और घायल होने के दृश्य देखे, तो उनके भीतर गहरी आत्मग्लानि उत्पन्न हुई। इस परिवर्तन ने उन्हें एक ऐसे मार्ग की ओर अग्रसर किया जो केवल शासन या साम्राज्य विस्तार तक सीमित नहीं था, बल्कि सम्पूर्ण मानवता की भलाई की दिशा में था। इस परिवर्तन का परिणाम था—अशोक का 'धम्म'। यह धम्म किसी धार्मिक संप्रदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह एक सार्वभौमिक नैतिक जीवन–दर्शन था जो हर व्यक्ति को मानवता, सत्य और करुणा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

अशोक का धम्म भारतीय परंपरा में धर्म के उस रूप का प्रतीक है जो कर्म, करुणा और सह–अस्तित्व पर आधारित है। उन्होंने 'धम्म' शब्द का प्रयोग 'धर्म' के संकीर्ण अर्थ में नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक और नैतिक व्यवस्था के रूप में किया। उनके धम्म में पूजा–पद्धति या अनुष्ठानिक व्यवहार से अधिक महत्व मानव के नैतिक आचरण को दिया गया। उन्होंने कहा कि धर्म का सच्चा रूप यह नहीं कि कोई व्यक्ति केवल कर्मकांडों में लिप्त रहे, बल्कि यह है कि वह दूसरों के प्रति दया, सत्य, और सम्मान का व्यवहार करे। इस दृष्टि से देखा जाए तो अशोक का धम्म आज भी सामाजिक नैतिकता और मानवीय एकता का शाश्वत आधार है।

अशोक ने अपने धम्म को फैलाने के लिए धार्मिक उपदेशकों की तरह प्रचार नहीं किया, बल्कि उन्होंने इसे अपने शासन के हर कार्य में उतारा। उन्होंने शासन को सेवा का माध्यम बनाया। उनके आदेशों में "धम्म महामात्रों" की नियुक्ति का उल्लेख मिलता है जो जनता के नैतिक उत्थान और कल्याण के लिए कार्य करते थे। उन्होंने स्तंभ लेखों और शिलालेखों के माध्यम से यह संदेश दिया कि सच्चा धर्म वह है जो सबके सुख और शांति का कारण बने। उनके धम्म का केंद्र बिंदु थाकृसर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय। आज जब राजनीति और शासन सत्ता–लोलुपता, भ्रष्टाचार और विभाजनकारी प्रवृत्तियों से ग्रस्त हैं, तब अशोक का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने हिंसा को त्यागकर अहिंसा और करुणा को जीवन का मूलमंत्र बनाया। उन्होंने पशु हिंसा को भी अपराध माना और पशुओं के संरक्षण के लिए विशेष प्रावधान किए। उन्होंने चिकित्सालयों की स्थापना करवाई, वृक्षारोपण के आदेश दिए और नदियों के किनारे छायादार वृक्ष लगवाए। इससे स्पष्ट होता है कि उनका दृष्टिकोण केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सम्पूर्ण जीव–जगत के प्रति संवेदनशील था। यह विचार आज के पर्यावरणीय संकट और पारिस्थितिक असंतुलन के युग में विशेष रूप से सार्थक है। जब जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता के विनाश जैसी समस्याएँ विश्व को संकट में डाल रही हैं, तब अशोक का यह समग्र दृष्टिकोण हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

अशोक का धम्म धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक सहिष्णुता की मिसाल भी प्रस्तुत करता है। उन्होंने अपने शिलालेखों में कहा कि सभी धर्मों के प्रति सम्मान रखना चाहिए क्योंकि हर धर्म का उद्देश्य मनुष्य को नैतिक बनाना और उसे सत्य के मार्ग पर ले जाना है। उन्होंने कहा कि किसी को भी अपने धर्म का प्रचार इस प्रकार नहीं करना चाहिए कि दूसरे धर्म का अपमान हो। यह दृष्टिकोण आज के समय में अत्यंत आवश्यक है, जब समाज में धार्मिक कट्टरता, असहिष्णुता और सांप्रदायिक विभाजन बढ़ते जा रहे हैं। अशोक का संदेश है कि सच्चा धर्म वही है जो प्रेम, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान को बढ़ावा दे। इस दृष्टि से, वर्तमान भारत और समूचे विश्व में जहाँ धर्म के नाम पर हिंसा हो रही है, अशोक की धर्मनिरपेक्ष नीति वैश्विक शांति और सामाजिक समरसता की कुंजी बन सकती है।

अशोक के धम्म में नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया गया। उनके लिए शासन की सफलता का अर्थ केवल प्रशासनिक दक्षता या सैन्य शक्ति नहीं था, बल्कि शासक का नैतिक आचरण भी उतना ही महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा कि राजा को अपने प्रजा के प्रति पिता समान होना चाहिए। यह विचार लोकतांत्रिक शासन के सिद्धांतों से भी मेल खाता है। आज जब राजनीति में स्वार्थ, जातिवाद और अवसरवाद की प्रवृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं, अशोक का आदर्श शासन हमें स्मरण कराता है कि राज्य तभी सशक्त होता है जब वह न्याय, सत्य और करुणा पर आधारित हो।

अशोक के धम्म की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है — सामाजिक समानता और सेवा–भाव। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि समाज के हर वर्ग, चाहे वह गरीब हो, स्त्री हो, वृद्ध हो या अल्पसंख्यक, सभी को समान सम्मान और अवसर मिले। उन्होंने अपने आदेशों में कहा कि स्त्रियों के प्रति सम्मान और परिवार के प्रति दायित्व निभाना धर्म का हिस्सा है। उन्होंने यह भी कहा कि

लोगों को वृद्धजनों, ब्राह्मणों, साधुओं और सेवकों के प्रति दयालु होना चाहिए। इस प्रकार, उनका धम्म केवल व्यक्तिगत आचरण तक सीमित नहीं था, बल्कि वह सामाजिक न्याय की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। आज जब समाज में असमानता, लैंगिक हिंसा और वर्गभेद की समस्याएँ गहराती जा रही हैं, अशोक की यह दृष्टि हमें सामाजिक सुधार और समानता की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

वर्तमान समय में जब दुनिया आतंकवाद, युद्ध, धार्मिक कट्टरता, पर्यावरणीय संकट और नैतिक पतन जैसी समस्याओं से जूझ रही है, अशोक का धम्म इन सभी संकटों के समाधान की दिशा दिखाता है। अहिंसा का उनका सिद्धांत युद्ध की विभीषिका से त्रस्त विश्व को शांति की ओर प्रेरित करता है। सहिष्णुता और समानता का उनका संदेश समाज में बढ़ती विभाजनकारी प्रवृत्तियों को समाप्त कर सकता है। पर्यावरणीय चेतना का उनका दृष्टिकोण आधुनिक पर्यावरण आंदोलन को नैतिक आधार प्रदान करता है। और सबसे बढ़कर, लोककल्याण पर आधारित उनका शासन दर्शन आज के लोकतांत्रिक शासन को मानवीय मूल्यों से जोड़ सकता है।

अशोक के धम्म का प्रभाव केवल उनके काल तक सीमित नहीं रहा। उनके विचारों ने आगे चलकर महात्मा गांधी जैसे नेताओं को भी प्रभावित किया। गांधीजी ने अहिंसा, सत्य और करुणा के जिन सिद्धांतों को अपनाया, वे उसी धम्म की आधुनिक अभिव्यक्ति थे। गांधीजी ने कहा था कि "अहिंसा केवल राजनीति की नीति नहीं, बल्कि मानवता की आत्मा है।" यह विचार अशोक की उस शिक्षा से गहराई से जुड़ा है, जिसमें उन्होंने कहा था कि "सभी प्राणी मेरे पुत्र समान हैं।" इस प्रकार, गांधी और अशोक दोनों ने यह स्पष्ट किया कि सच्ची शक्ति हिंसा में नहीं, बल्कि करुणा और नैतिकता में निहित है।

अशोक की नीतियों का प्रभाव भारतीय संविधान की मूल भावना में भी देखा जा सकता है। भारतीय संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता, समानता और न्याय के आदर्श वस्तुतः धम्म के ही आधुनिक स्वरूप हैं। संविधान के निर्माताओं ने भारतीय संस्कृति की उस परंपरा को आधार बनाया जिसमें अशोक के धम्म जैसे नैतिक सिद्धांतों की गूंज थी। अशोक के सिंह स्तंभ को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार करना इस बात का प्रमाण है कि भारत ने अपने राष्ट्रीय जीवन में धम्म के आदर्शों को आत्मसात किया है।

आज जब मानव सभ्यता तकनीकी प्रगति के चरम पर है, तब भी मानवता की भावना पीछे छूटती जा रही है। भौतिकता ने मनुष्य को संवेदनहीन बना दिया है। अशोक का धम्म हमें याद दिलाता है कि विज्ञान और प्रगति का कोई अर्थ नहीं यदि मनुष्य अपने नैतिक आधार को खो दे। अशोक का यह विचार कि "धर्म का सार आचरण में है, न कि केवल वचन में" आज के भौतिकवादी समाज के लिए चेतावनी की तरह है। जब हर स्तर पर प्रतिस्पर्धा, स्वार्थ और लोभ बढ़ रहे हैं, तब करुणा और सत्य का उनका संदेश हमें आत्ममंथन के लिए प्रेरित करता है।

अशोक का धम्म एक वैश्विक दर्शन है जो किसी विशेष समय, देश या जाति तक सीमित नहीं। यह सार्वभौमिक है — हर युग में लागू होने वाला। आज जब विश्व शांति, सह–अस्तित्व, और मानवीय अधिकारों की बात करता है, तब यह विचार मूलतः उसी दिशा का विस्तार है जिसे अशोक ने दो हजार वर्ष पहले प्रतिपादित किया था। उन्होंने धर्म को राजनीति से नहीं, बल्कि नैतिकता से जोड़ा। उन्होंने शासन को सेवा का माध्यम बताया। इसीलिए उनका शासन आदर्श शासन कहलाया, जहाँ राजा का लक्ष्य था प्रजा की भलाई, न कि सत्ता की स्थिरता।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो अशोक का धम्म सामाजिक नियंत्रण का एक नैतिक साधन था। यह कानून या दंड पर आधारित नहीं था, बल्कि यह व्यक्ति की अंतरात्मा को संबोधित करता था। यह ऐसी व्यवस्था थी जिसमें व्यक्ति स्वयं अपने आचरण से समाज में सामंजस्य लाता था। आधुनिक लोकतंत्रों में जहाँ क़ानूनी ढांचे के बावजूद नैतिक पतन दिखाई देता है, अशोक का यह दृष्टिकोण बताता है कि केवल कानून नहीं, बल्कि नैतिक चेतना ही समाज को स्थायी रूप से सुचारु रख सकती है।

अशोक का धम्म शिक्षा और नैतिक संस्कार के महत्व को भी रेखांकित करता है। उन्होंने अपने अभिलेखों में कहा कि "धम्म की शिक्षा बच्चों से लेकर वृद्धों तक सबके लिए आवश्यक है।" आज जब शिक्षा केवल रोजगार तक सीमित हो रही है, और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, अशोक की यह बात हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र निर्माण और समाज में नैतिकता की स्थापना है।

वर्तमान युग में अशोक का धम्म न केवल धार्मिक या नैतिक दृष्टि से, बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी प्रासंगिक है। जिस प्रकार उन्होंने शासन में करुणा, सहिष्णुता और लोककल्याण को जोड़ा, वह आज के किसी भी राष्ट्र के लिए आदर्श हो सकता है। आधुनिक नेतृत्व को यदि स्थायी शांति, विकास और सामाजिक सामंजस्य की दिशा में आगे बढ़ना है, तो उसे अशोक की धम्मनीति से प्रेरणा लेनी चाहिए।

अंततः कहा जा सकता है कि अशोक का धम्म केवल अतीत का आदर्श नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता है। इस धम्म में न तो किसी प्रकार का संकीर्णता है, न किसी धर्म विशेष का आग्रह। यह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की भावना पर आधारित है। जब तक मनुष्य में अहंकार, हिंसा, और स्वार्थ रहेगा, तब तक अशोक का धम्म प्रासंगिक रहेगा, क्योंकि यह मानवता को आत्मज्ञान, करुणा और सह–अस्तित्व का संदेश देता है। आधुनिक युग में जहाँ शांति, पर्यावरणीय संतुलन और नैतिकता की खोज जारी है, अशोक का धम्म हमें मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह बताता है कि सभ्यता का अर्थ केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान भी है। इस प्रकार, सम्राट अशोक की धम्मनीति आज भी उतनी ही जीवंत और आवश्यक है जितनी दो हजार वर्ष पहले थी। वह हमें यह सिखाती है कि वास्तविक शक्ति करुणा में है, और सच्ची विजय मनुष्य के हृदय की विजय है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामशरण. अशोक और उनका धम्म. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002.
2. झा, डी.एन. प्राचीन भारत का इतिहास. दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 2014.
3. Thappar Romila. Aśoka and the Decline of the Mauryas. OÛford University Press. New Delhi, 2012.
4. Majumdar R C. Ancient India. Motilal Banarsidass. Delhi, 1999.
5. Altekar A S. State and Government in Ancient India- Banaras Hindu University Press. Banaras, 1958.
6. Basham A L. The Wonder That Was India- Grove Press. New York, 1954.
7. Gokhale B G. Ashoka Maurya: Theory and Practice of Kingship. Journal of Asian Studies,1960:19:3.
8. Dhammika Ven. S. The Edicts of King Ashoka: An English Rendering- Kandy: Buddhist Publication Society, 1993.
9. Dutta, Nalinaksha. Buddhist Sects in India. Motilal Banarsidass. Delhi, 1977.
10. Sharma K L. Indian Social Thought. Rawat Publications. Jaipur, 2008.
11. Radhakrishnan S. Indian Philosophy, Vol. I-II. OÛford University Press. London, 1998.

12. Goyal S R. A History of Indian Buddhism. Meerut: Kusumanjali Prakashan, 1987.
13. Basham A L. The Heritage of Indian Civilization-London: Clarendon Press, 1963.
14. Singh Upinder. A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century. Pearson Education. New Delhi, 2008.